Bihar Board Class 7 Sanskrit Notes Chapter 8 वसुधैव कुटुम्बकम्

वसुधैव कुटुम्बकम् Summary

[आज विश्व अशान्ति के सागर में वर्तमान है । सर्वत्र असंतोष, महत्त्वाकांक्षा, ईर्ष्या, पक्षपात इत्यादि के कारण संघर्ष के बादल छाये हुए हैं। ऐसी स्थिति में प्राचीन भारत की ओर सभी की दृष्टि जाती है जहाँ सम्पूर्ण पृथ्वी को अपना परिवार समझा जाता था। भारत ने विभिन्न विदेशी जातियों का स्वागत किया तथा उन्हें भारतीय बनाया । विश्व को अशान्ति से मुक्त करने के लिए आज उसी उद्घोष की आवश्यकता है कि पूरी पृथ्वी परिवार के समान मान्य तथा पालनीय है। मानवता के इसी संदेश को प्रस्तुत पाठ में प्रकट किया गया है।

अधुना सम्पूर्णः संसारः अशान्तो ..... तद् दुःखकारणम् ।

शब्दार्थ-अधुना = आजकल । अशान्तः – जो शान्त न हो, बेचैन । प्रति " (की) ओर । द्वेषग्रस्त = ईर्ष्या से युक्त | महत्त्वाकांक्षा – ऊंची इच्छा । स्वार्थसिद्धिः – अपने हितों की सिद्धि । स्वस्य – अपने का । कामना – इच्छा । परस्य – दूसरे का । शोषणाय – शोषण के लिए / कष्ट देने के लिए। कमपि .. किसी को भी ।

प्रेरयति – प्रेरणा देता है । वाञ्छन्ति "चाहते/ चाहती हैं । कश्चित् = कोई 1 उत्कर्षम = ऊँचाई (को)। सरलार्थ-आजकल सम्पूर्ण संसार अशान्त है । देश देश के प्रति, समाज समाज के प्रति मनुष्य मनुष्य के प्रति द्वेष ग्रस्त है । इसका कारण भी है । स्वार्थ सिद्ध, सुख की इच्छा और ऊँची इच्छा दूसरे का शोषण करने के लिए प्रेरित करता है । सभी अपना सुख चाहते हैं, कोई दूसरे का सुख या उन्नति को नहीं सहन करते है। इससे अशांति होता है । यह दुःख का कारण है।

अशान्तः मानवः राक्षसः इव भवति .....द्वषः शत्रुभावना च
न भवेत् ।

शब्दार्थ- राक्षसः = दैत्य । सहते = सहन करता । करती है। शस्त्रादीनाम् = शस्त्र (पकड़कर चलाये जाने वाले हथियार) आदि का । दृष्ट्वा – देखकर । प्रमुदितः = प्रसन्न, आनन्दित, खुश । मन्यते – माना जाता है । एकरूपाः – समान, एक जैसा । सन्तानाः – संतान (बहुवचन) ।

आत्मभावनाम् = अपनी जैसी भावना (को) । धारयति – धारण करते हैं, रखते हैं । वस्तुतः – सचमुच । परस्परम् = आपस में । भवेम = (हम)हों। मोहः = लगाव । द्वेषः – ईर्ष्या, जलन । शत्रुभावना – दुष्टता की भावना । . सरलार्थ-अशान्त मनुष्य राक्षस के समान होता है । यदि वह देव तुल्य बन जाए तो संसार शान्त, प्रसन्न और आनन्दमय हो जाएगा । तब शस्त्रों की आवश्यकता नहीं होगी । एक दूसरे को देखकर खुशी होना चाहिए । जैसे अपने बान्धव और परिवार को मानते हैं वैसे ही दूसरे लोगों को भी बान्धव और परिवार मानना चाहिए । सभी एक-समान हैं, एक ईश्वर की संतान हैं, भिन्न । कैसे हैं ? जो सभी लोगों में अपनी जैसी भावना को धारण करता है, वह वास्तव में देवता है। हमारा लक्ष्य वही होना चाहिए जो हम सभी आपस में मित्रवत् और बन्धुवत रहें । तब मोह, द्वेष और शत्रुता की भावना नहीं होनी चाहिए ।

अद्य वैज्ञानिकस्य .....न कुर्यात् । तथा च हितापदेश:

https://www.evidyarthi.in/

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् । उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ शब्दार्थ- अल्पीकृतः – छोटा हो गया (है) । एकस्मिन् = एक में । घटिता – घटी हुई । शीघ्रमेव (शीघ्रम एव) – जल्दी ही । प्रभावयति – प्रभावित करता है, असर डालता है । वैश्वीकरणस्य – वैश्वीकरण का (विश्व के देशों का आर्थिक, वैज्ञानिक आदि आधारों पर जड़ना – वैश्वीकरण) । प्रभावात् – प्रभाव से । उत्पादः – उत्पन्न वस्तु 1 विश्वबन्धुत्वम् = वैश्विक (संसार भर में) भाईचारा । प्रभूतम् = बहुत अधिक । भवत्येकनीडम् – एक घोसले का निवासी होता / होती है । कार्यस्थले – कार्य की जगह में /पर । एकनीडाः – एक घोसले में रहने वाले । स्वार्थः – अपना हित ।

नश्यति – नष्ट होता है, लुप्त या अदृश्य होता है । परमार्थः – सर्वोच्च लक्ष्य । वर्धते – बढ़ता है । स्वदेशः = अपना देश, राष्ट्र । परदेशः = दूसरे का देश । उदारस्य = उदार, बड़े दिल वाले का । लक्ष्णमस्ति (लक्षणम् अस्ति)लक्षण / पहचान / चिह्न है । कुर्यात् – करना चाहिए । अयम् – यह । निजः – अपना । परो (परः) – पराया । वेति (वा इति) – अथवा ऐसा । गणना – गिनती । लघुचेतसाम् – तुच्छ । निम्न विचार वाले लोगों का । उदारचरितानाम् – व्यापक विचार वाला का की । वसुधैव (वसुधा एव) – धरती । पृथ्वी ही । कुटुम्बकम् = परिवार, संबंधी ।

सरलार्थ-आज वैज्ञानिक विकास का परिणाम है जो संसार छोटा हो गया है। आज एक देश में घटित घटना पूरे विश्व को प्रभावित करती है।" वैश्वीकरण के प्रभाव से एक उत्पाद शीघ्र सभी देशों में जाता है । अतः आज विश्वबन्धुत्व की बड़ी आवश्यकता है । उत्सवों और समारोहों में आपस में मिलते हुए लोग बन्धुत्व प्रदर्शित करते हैं ।

हमारे शास्त्रों में कहा गया हैजो विश्व एक घोंसले का निवासी होता है । जैसे एक घोंसला में पक्षियों का परिवार रहता है वैसे ही कहीं समारोह में शिक्षालयों में तथा कार्यशालाओं में सभी एक घोंसला में रहनेवाला होता है । जैसे वहाँ बन्धुता है वैसे ही सामान्य जीवन में भी देशों के, समाजों के और वर्गों के बीच एक घोंसलापन और बन्धुत्व होना चाहिए । वहाँ स्वार्थ पूर्णत: नष्ट हो जाता है और परमार्थ वृद्धि पाता है । अपना देश और दूसरे का देश परमार्थतः एक ही है । उदार लोगों का यही लक्षण है कि उसे अपना और पराये का विचार नहीं करना चाहिए। और हितोपदेश में कहा गया है यह अपना है यह दूसरों का है ऐसी गणना निम्न विचार वालों का है. व्यापक विचार वालों का तो पृथ्वी ही परिवार है।

व्याकरणम्

सन्धि-विच्छेदः

मानवश्च = मानवः + च (विसर्ग सन्धि)
महत्त्वाकांक्षा, = महत्त्व + आकांक्षा (दीर्घ सन्धि)
आनन्दमयश्च = आनन्दमय: + च (विसर्ग सन्धि)
तथैव = तथा + एव (वृद्धि सन्धि) ।
बन्धरूपाश्च = बन्धुरूपाः + च (विसर्ग सन्धि)
अद्यापि = अद्य + अपि (दीर्घ सन्धि)
भवत्येकनीडम् = भवति + एकनीडम् (यण् सन्धि)
जीवनेऽपि = जीवन + अपि (पूर्वरूप सन्धि)
हितोपदेशः = हित + उपदशः (गुण सन्धि)
वेति = वा + इति (गुण सन्धि)
वसुधैव = वसुधा + एव (वृद्धि सन्धि)

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

https://www.evidyarthi.in/

वर्तते = √वृत् , लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

अस्ति = √अस् , लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

प्रेरयति = प्र + √ईर् = गति , णिच् लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

सहते = √सह् , लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

भवति = √भू , लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

भवेत् = √भू विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

प्रभावयति = प्र + √भू + णिच्, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

गच्छति = √गम् , लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

प्रभूतम् = प्र + √भू + क्त, नपुंसक लिङ्ग, एकवचन

दर्शयन्ति = √दृश् , + णिच्, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

वर्धते = √वृध् , लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

कथ्यते = √कथ् + यक् (कर्मवाच्य) + लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

निवसति = नि + √वस् , लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

नश्यति = √नश् , लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

कुर्यात् = √कृ , विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/